FEBRUARY 2023

RAINBOW SATHI
रेनबो साथी

Inclusion Is The Mantra

SOCIAL JUSTICE PAVES THE WAY TO GROW

सबको साथ लेने का गुर

सामाजिक न्याय से मिलेगा आगे बढ़ने का रास्ता

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథీ • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథీ • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథీ • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

TEAM Work

Year 7, Issue 26
February 2023

EDITOR IN CHIEF
BHASHA SINGH

ADVISIORY BOARD
T.M. KRISHNA
GEETA RAMASWAMY
K. LALITHA,
K. ANURADHA

EDITORIAL BOARD
CHANDA (DELHI)
M SRAVANTHI (HYDERABAD)
AMITA KUMARI (PATNA)
MADHUMITA, (KOLKATA)
AMBIKA, DEEPTI
BEZWADA WILSON

CHILD JOURNALIST
AMBIKA KALE, PUNE
PREETI KUMARI, RANCHI
ANIKET LOHRA, RANCHI
SUMMI MUNIR, DELHI
DEEPAK AMAN, DELHI
DEVI.S PRASAD, HYDERABAD
K.LAVANYA, HYDERABAD
TAPITEJ, HYDERABAD
KIRUTHIKA S, CHENNAI
CHAMPA, PATNA
SHYAM, PATNA
V.DURGAPRASAD, HYDERABAD
DURGA SHETTI, PUNE
RUPAL ORAON, RANCHI
DUBRAJ MALAR, RANCHI
LAXMI , BANGALORE
VENISSA NIYOLA D'SOUZA, BANGALLORE
SABINA KHATUN, KOLKATA
SUTAPA DOLUI, KOLKATA
AAKASH, PATNA
RUPALI TERESA DEY, KOLKATA
ARJUN H, CHENNAI
KOKILAVANI M, CHENNAI

CITIZEN JOURNALIST
ARTI SINGHASAN, DELHI
PRIYADHARSHINI, CHENNAI
MAUSAM KUMARI PATNA
AISHWARYA, BANGALLORE
AMAN KUMAR, HYDERABAD
CH.NIKITHA, HYDERABAD
SELVI M, CHENNAI
SANTHOSH, BANGALLORE

SUPPORT TEAM
MANJULA TELAGADE BANGALORE
SABARITHA CHENNAI
SHREETANJALI DELHI
KRANTHI KIRAN & AHAROAN KANKANALA HYDERABAD & ANANTAPUR
RAJASHREE CHAKRABORTY KOLKATA
MADHURI MUMBAI
ANSHUL RAI PATNA
RUBANA & SARIKA PUNE
SHWETA KACHHAP RANCHI

Design: ROHIT KUMAR RAI

Editor's Column

हम बोलें दुनिया सुने...

दोस्तो

सामाजिक न्याय और बच्चे। सामाजिक न्याय और बच्चों के अधिकार। सामाजिक न्याय और सरकार की कल्याणकारी योजनाएं। सामाजिक न्याय और बराबरी-समता का सपना। जैसे ही हम सामाजिक न्याय के बारे में बात करते हैं, हम अनगिनत संदर्भों में सोचने लगते हैं। सबसे पहले हमारे दिमाग में तस्वीर उभरती है बच्चों की। बच्चों की जिंदगी और भविष्य में सामाजिक न्याय की क्या कोई भूमिका है?

जी हां, बहुत बड़ी और महत्वपूर्ण भूमिका है। सामाजिक न्याय ही वह जमीन तैयार करता है जहां सारे बच्चे एक समान देखे जाते हैं। कोई ऊंचा नहीं, नीचा नहीं। सारे बच्चे एक समान और इसमें विकास की बेलगाम दौड़ में जो बच्चे और उनके परिजन पिछड़ जाते हैं- उनको बाकी के बराबर लाने के लिए विशेष प्रावधान किये जाते हैं। यानी कमजोर बच्चों को, चाहे वे शारीरिक-सामाजिक-मानसिक रूप से पिछड़े हों, सबको एक स्तर पर लाने की सोच ही सामाजिक न्याय की सोच है। इसीलिए हम सबने संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा निर्धारित सामाजिक न्याय दिवस को 20 फरवरी को अच्छे से मनाया और अंतर्राष्ट्रीय कड़ी से भी जुड़े।

बच्चों के इन अधिकारों की गारंटी कानूनों से होती है। हमारे देश का संविधान सरकारों को कल्याणकारी राज्य के रूप में काम करने को कहता है। इसके तहत तमाम कानूनों के जरिए समाज में आर्थिक-सामाजिक-राजनीतिक विषमता को दूर करना, समरसता की स्थापना करना, सबको बराबरी के अवसर देने के साथ-साथ तमाम तरह के भेदभाव को खत्म करने की गारंटी करने की कोशिश की जाती है। मिसाल के तौर पर हम बच्चों के लिए शिक्षा का अधिकार कानून बहुत बड़ा परिवर्तन लेकर आया। बच्चों को पोषण देने के लिए आगंनबाड़ी व स्कूलों में मध्याह्न भोजन का नियम, देश के भविष्य को सुंदर और मजबूत करने के सपने के साथ उठाया गया कदम था। इस तरह के अनगिनत कानून और कदम सामाजिक न्याय लागू करने के लिए उठाए गये। इसी कड़ी में रेनबो होम्स की स्थापना भी है।

इन होम्स के जरिए ही समाज में वंचित, हाशिए पर डाले गये, अनेक प्रकार की हिंसा का शिकार हुए समुदायों के बच्चों को बेहतर जीवन जीने का मौका मिलता है। हमारी आंखों में जब सपने सजते हैं तो हमारे माता-पिता-हमारा अभिभावक, हमारी होम मदर, रेनबो स्टाफ और हमारे दोस्त कितने खुश होते हैं। हमें अपने आसपास सपनों और खुशियों का इंद्रधनुष बनाना है।

हम लड़ेंगे, हम जीतेंगे !!!

We speak, the world listens.

Friends

Social justice and children! Social justice and rights of children! Social justice and welfare schemes of government! Social justice and dreams of equity-equality! As soon as we start talking about social justice, we start thinking in countless references. But, first of all the picture that emerges in our minds is of children. Does social justice play any role in lives and future of children?

Yes! It has a very important role. Social justice prepares the ground where all kids are considered as equal and treated as equal. Also, the kids and their families who often lag behind in this so-called race to development, they are brought on equal footing too. Thus the idea of social justice is to bring weaker kids, whether physically, economically or intellectually to a same level. That is the reason, we align ourselves with UN designated World Day of Social Justice on 20th February every year and celebrate it in full spirit.

Such rights for children are guaranteed through law. Our constitution asks our governments to work for a welfare state. A welfare state makes laws to eradicate economic-social-political disparities, establish harmony and provide equal opportunities to all by putting end to all sort of discrimination. For example, Right to Education law was a bit step in this direction. Similarly, to provide all kids with proper nutrition, a mid-day meal scheme was initiated in all government schools and anganbadis. These all were steps to make country's future beautiful and bright. Many such works were initiated to ensure social justice. Our Rainbow Homes are also part of this chain.

These Homes provide a ray of hope for better life to children of marginalised and vulnerable communities. When our eyes glow with dreams, they spread happiness to our families, friends, Home staff and all others taking care of us. We need to create a rainbow of such dreams and happiness around us.

WE SHALL FIGHT, WE SHALL WIN!!!

Ranchi

Varsha Kumari, Rainbow Home, Kute, Ranchi

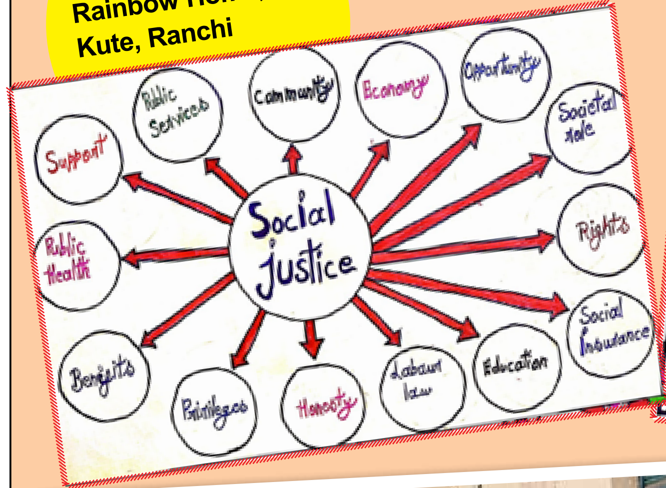

Anita Toppo, R.F.I, Kute, Ranchi

Social justice day: Equality for ALL

Rainbow Home Kute, Ranchi celebrated International Social Justice Day on 20 February 2023 in which 45 students took part. HMC Shweta Kashyap and Counselor Sajida Farheen taken sessions on this occasion. First of all, the children were told that International Social Justice Day was celebrated for the first time on 20 February 2009. The purpose of celebrating This Day is to make people aware about the global principles of Social Justice and to remove inequalities based on, caste, religion, cultural and gender barriers. Similarly, 25 September is celebrated as National Social Justice Day in India.

सबकी बराबरी के लिए सामाजिक न्याय दिवस

20 मार्च 2023 को रेनबो होम कुटे, रांची में विश्व सामाजिक न्याय दिवस आयोजित किया गया जिसमे 45 बच्चों ने शिरकत की। इस मौके पर पर एचएमसी श्वेता कश्यप और काउंसलर साजिदा फरहीन द्वारा सेशन लिए गए। सबसे पहले बच्चों को बताया गया कि पहली बार 20 फरवरी 2009 को विश्व सामाजिक न्याय दिवस मनाया गया था। यह दिवस मनाने का मकसद था, लोगों को सामाजिक न्याय के वैश्विक सिद्धांतों के बारे में जागरूक करना और लिंग, राष्ट्रीयता, जाति, धर्म व संस्कृति की बाधाओं को दूर करना। उसी तरह भारत में 25 सितंबर को राष्ट्रीय सामाजिक न्याय दिवस मनाया जाता है।

HYDERABAD

CHILD RIGHTS DEFENDERS AT RAINBOW HOMES

Rainbow children are aware of their rights, entitlements and equal opportunities. We are practicing these aspects, but many more children are still deprived of these things. Rainbow Homes teams are also aware of their rights and entitlements. Thus, when children grow up here, they have to influence their own life and society around them. On World Social Justice Day, we shall start thinking about larger social justice issues like becoming free from discrimination, free from hunger, free from all types of exploitation and accessing zestful life of us. On this day we have discussions, some of our Rainbow Home's and Rainbow children friends share their experiences with children and also share their learning on how they come up with life and how they overcome their challenges, how they are looking the society with democratic and humanistic way.

UN's Social Justice Day, celebrated globally on 20 February, has a lot of significance. Social justice should lead from equity to equality. It should provide right to life to every children- those, whose parents are not able to take care of them and even those who have lost their parents.

K. Anuradha, Executive Director,
Rainbow Homes Program

रेनबो होम्स के बाल अधिकार रक्षक

रेनबो होम्स के बच्चे अपने अधिकारों, पात्रताओं और समान अवसरों के बारे में जानते हैं। हम इन तमाम पहलुओं का रेनबो होम्स में पालन कर रहे हैं। लेकिन कई बच्चे अभी इन चीजों से वंचित हैं। रेनबो होम्स की टीम भी इन अधिकारों व पात्रताओं के प्रति जागरूक है। जाहिर है कि जब बच्चे बड़े होते हैं तो उन्हें इसी अनुरूप अपने जीवन को और अपने आसपास को समाज को बदलना होता है। विश्व सामाजिक न्याय दिवस पर हमें बड़े मुद्दों- जैसे भेदभाव से आजादी, भूख से आजादी, सभी प्रकार के शोषण से आजादी और ऊर्जावान जीवन तक पहुँच के बारे में सोचना चाहिए। इसलिए इस दिन हम चर्चाएं करते हैं। रेनबो होम के और रेनबो के बच्चों के कुछ दोस्त अपने अनुभव साझा करना पसंद करते हैं और बताते हैं कि वे जीवन को कैसे देखते हैं और कैसे चुनौतियों से पार पाते हैं, कैसे वे समाज को लोकतांत्रिक और मानवतावादी तरीके से देखते हैं।

हर साल 20 फरवरी को मनाए जाने वाले संयुक्त राष्ट्र के विश्व

सामाजिक न्याय दिवस की काफी अहमियत है। सामाजिक न्याय को हमें समता व समानता की ओर ले जाना चाहिए। उसे हर बच्चे को जीवन का अधिकार देना चाहिए- जिनके माता-पिता उनकी देखरेख करने में सक्षम नहीं हैं, या फिर जो अपने माता-पिता को खो चुके हैं, उन्हें भी।

के अनुराधा,
एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर, रेनबो होम्स प्रोग्राम

Mumbai

In Basti WITH KIDS & PARENTS

Rainbow learning center in Mumbai celebrated the World Social Justice Day in the community on 20th February 2023. RFI Team visited the place where parents of the children live. All children were gathered at one place. In the start, we gave every one the basic information about the concept of Social Justice day. We also organised a drawing competition for children. We conducted the whole activity with children and parents in the field area, and we were able to reach 50 children and 20 children parents for this.

बस्ती में बच्चों, परिजनों संब

मुंबई स्थित रेनबो लर्निंग सेंटर ने समुदाय के लोगों के साथ मिलकर 20 फरवरी 2023 को विश्व सामाजिक न्याय दिवस मनाया। आरएफआई टीम के लोग वहां पर गए जहां बच्चे अपने माता-पिता के साथ रहते हैं। सारे बच्चों को एक जगह पर इकट्ठा किया गया। सबसे पहले टीम ने सभी को सामाजिक न्याय दिवस के मसले पर बुनियादी जानकारी दी। उसके बाद बच्चों के लिए ड्राइंग कंपीटिशन आयोजित किया गया। इस आयोजन में हम 50 बच्चों और करीब 20 माता-पिता के साथ रहे।

Kolkata

समाज में बराबरी जरूरी

कोलकाता में लॉरेटो रेनबो होम्स की सिटी डेस्क ने 20 फरवरी 2023 को विश्व सामाजिक न्याय दिवस के मौके पर बच्चों के लिए सामाजिक न्याय के मुद्दे पर एक विशेष सत्र का आयोजन किया। एक विशेष गतिविधि के जरिये बच्चों को यह अहसास कराने की कोशिश की गई कि हर व्यक्ति समान सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों व अवसरों को पाने का हक रखता है। बच्चियों को रोल प्ले के जरिये यह दिखाने की कोशिश की गई कि समाज में रोजमर्रा में किस-किस तरह से सामाजिक भेदभाव दखने-महसूस करने को मिलते हैं। ऐसी ही स्थितियों के लिए सामाजिक न्याय की सबसे ज्यादा जरूरत होती है।

NEED OF AN EQUITABLE SOCIETY

City Desk of Loreto Rainbow Homes in Kolkata conducted a session on Social justice for the children on 20th February, 2023 on the occasion of World Social Justice Day. The children were given an overview through an activity that everyone deserves an equal social, economic, political rights and opportunities. The girls were shown through role play various scenes of discrimination are occurring in the society where social justice is needed.

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథీ • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

Patna

To Create Awareness of Entitlement

On February 20 we observed social justice day at our homes and the fields. The day was observed in the presence of children, parents, and members of civil society. Discussions and programs were organized at different homes and learning centers in Patna. Participants remembered the constitutional values, sang songs, and delivered speeches. The main theme was to educate the parents and the children about their rights and entitlements. Parents were vocal about their concern that they observe in their everyday life in the form of inequality and injustice. It was an important event, where we organized discussions on topics like the prevention of child marriage, access to entitlements, and the need to address the growing injustice around society.

Civil society members shared their view-points to create a just and equitable society and the relevance of social justice in the upliftment of a community. The discussion culminated in creating a collective community to strive for rights and demand justice. Parents and civil society members reiterated the need for education to achieve the goals. Also, it was understood that the community has to influence the various institutions that are directly responsible for delivering the rights and entitlements. The event culminated in effective discussions and the solutions that have to be devised in order to achieve the justice and rights which are enshrined in the constitutions for all the people.

Anshul Rai,
City Coordinator, Rainbow Homes, Patna

"आयोजनों का मुख्य उद्देश्य अभिभावकों और बच्चों को अपने अधिकारों व पात्रताओं के बारे में जागरूक बनाया जाए। खास तौर पर अभिभावकों ने अपनी चिंताओं को काफी मुखर रूप से सामने रखा क्योंकि वे रोजमर्रा की जिंदगी में असमानता व अन्याय को निरंतर झेलते हैं।"

अधिकारों व पात्रताओं के बारे में जागरूकता फैलाना

20 फरवरी को हमने अपने होम में और होम के बाहर भी सामाजिक न्याय दिवस मनाया। इस आयोजन में बच्चों के साथ-साथ उनके माता-पिता व अभिभावकों और सिविल सोसायटी के प्रतिनिधियों ने भी शिरकत की। पटना में अलग-अलग होम व लर्निंग सेंटर में चर्चा व कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें हमारे संवैधानिक मूल्यों को याद किया गया, गीत गाए गए और भाषण हुए। आयोजनों का मुख्य उद्देश्य यह था कि अभिभावकों और बच्चों को अपने अधिकारों व पात्रताओं के बारे में जागरूक बनाया जाए। खास तौर पर अभिभावकों ने अपनी चिंताओं को काफी मुखर रूप से सामने रखा क्योंकि वे रोजमर्रा की जिंदगी में असमानता व अन्याय को निरंतर झेलते हैं। आयोजनों में बाल-विवाह को रोकने, पात्रताओं तक पहुंच बनाने और समाज में बढ़ते अन्याय से निबटने के मुद्दो पर भी विचार हुआ।

सिविल सोसायटी के सदस्यों ने एक बराबरी वाला समाज गढ़ने और कमजोर समुदायों को आगे बढ़ाने में सामाजिक न्याय की प्रासंगिकता पर बातें रखीं। न्याय व अधिकारों के लिए सामूहिक तौर पर संघर्ष करने का आह्वान हुआ। लेकिन सबने इन मकसद को हासिल करने के लिए शिक्षा की अहमियत पर सबसे ज्यादा जोर दिया। यह भी माना गया कि दबाव उन विभिन्न संस्थानों पर भी बनाना होगा जो अधिकारों व पात्रताओं को देने के लिए प्रत्यक्ष तौर पर जिम्मेदार हैं। कुल मिलाकर हमारे संविधान में जो न्याय व अधिकारों की बातें निहित हैं, उन्हें हासिल करने के तरीकों पर उपयोगी चर्चाएं इस दिन हुईं।

अंशुल राय,
सिटी कॉर्डिनेटर, रेनबो होम्स, पटना

Delhi

ROLE PLAY TO DEPICT REALITY

A session was conducted at Khushi Home in Delhi on the occasion of "World social justice Day" on 20th February 2023, with children of age group 14 to 17 yrs. The purpose of this session was to raise voice against social injustice. The global day is meant to promote social justice and to bring various communities internationally together to eliminate poverty, illiteracy, gender and religious discrimination to make a socially inclusive society.

In the session small meditation was done with children. Discussion was held in which several pictures were shown to then which depicted inequality and injustice. Role play was done with children in which 4 groups were made and each group was given situations on gender discrimination, inequality and injustice-just like at home with a girl, where more preference is given to a boy. Children were asked to enact the injustice that happens in daily life. Then children showed how they can show justice by doing the role play again by enacting the changes.

Poster making was done where children made different drawings depicting social justice. Children enjoyed the session and participated well. Children shared their experiences that this still happens in their home and have seen in movies as well.

समाज की सच्चाई से रूबरू हम

'विश्व सामाजिक न्याय दिवस' के मौके पर 20 फरवरी 2023 को दिल्ली के खुशी होम में 14 से 17 साल की उम्र के बच्चों के साथ एक विशेष सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र का मसद था सामाजिक अन्याय के खिलाफ आवाज खड़ी करना। यह वैश्विक दिवस सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने के लिए, और गरीबी, अशिक्षा और लैंगिक व धार्मिक भेदभाव को खत्म करने के लिए विभिन्न अंतरराष्ट्रीय समुदायों को अकजुट करने के लिए मनाया जाता है।

सत्र में पहले बच्चों ने थोड़ा ध्यान लगाया, उसके बाद चर्चाएं हुईं जिनमें बच्चों को असमानता व अन्याय दो दिखाने वाली तस्वीरें भी दिखाई गईं। फिर बच्चों को चार समूहों में बांटकर उनसे अभिनय कराया गया। इसके लिए उन्हें लैंगिक भेदभाव और अन्याय व असमानता की स्थितियां दर्शाने को कहा गया, जैसे कि एक ऐसे घर की स्थिति जहां लड़की तुलना में लड़के को ज्यादा तरजीह दी जाती है। बच्चों से रोजमर्रा की जिंदगी में होने वाले अन्याय को दिखाने को कहा गया। फिर उन्हें उसी स्थिति में से अन्याय व गैरबराबरी को हटाकर उसे फिर से दिखाने को कहा गया, जैसा उनके अनुसार होना चाहिए।

बच्चों ने सामाजिक न्याय के विषय पर पोस्टर भी बनाए। बच्चों को इस सत्र में बड़ा मजा आया। सभी बच्चों ने सझा किया कि किस तरह से उनके यहां अब भी घरों में ऐसा ही चलता है और कैसे वह फिल्मों में भी सब देखते हैं।

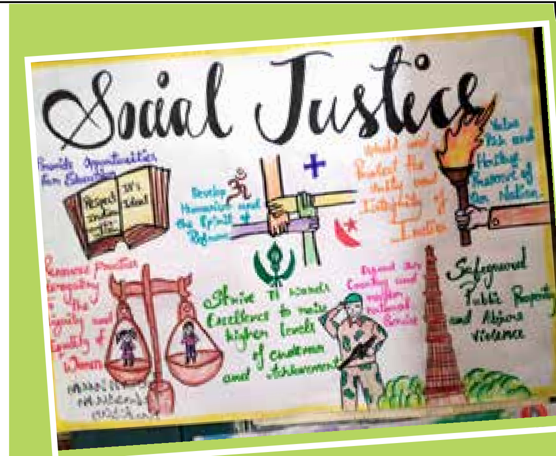

Tarannum, Tabassum and ruksar (Kilkari home)

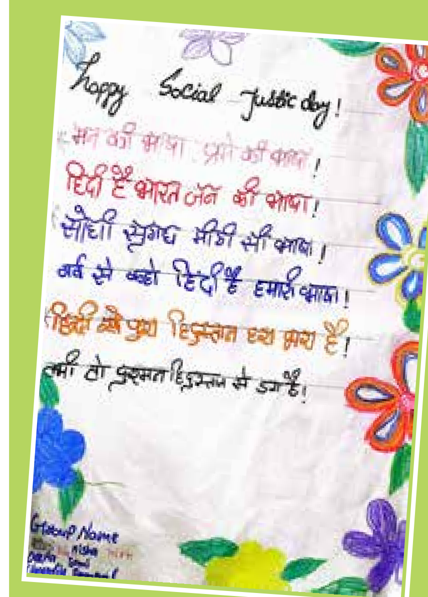

Nisha, Kirti, somi, deepa, chandni, chanchal (kilkari Home)

Shabina, mohini,shehzadi, ilima and riya (Kilkari HOme)

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథీ • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

Pune

Significance of social justice in overall development of a person

THE OBJECTIVE OF OBSERVING THE DAY WAS TO RAISE AWARENESS ABOUT SOCIAL EQUALITY, SOCIAL JUSTICE, AND EQUAL TREATMENT OF ALL CITIZENS WITHOUT DISCRIMINATING ON ANY SOCIAL DISTINCTION BASED ON CASTE, COLOUR, RACE, RELIGION, GENDER AND SO ON

Rainbow Home, Pune, observed the 'World Social Justice Day' on 20th February 2023 with children and parents involved in programs, namely, the Community-based Care (CBC) Program, Residential Care Program and Rainbow Community Care and Learning Centre (RCCLC). A total of 340 children and parents across the programs of Rainbow Homes actively participated in the celebration of the event at different places. The objective of observing the day was to raise awareness about social equality, social justice, and equal treatment of all citizens without discriminating on any social distinction based on caste, colour, race, religion, gender and so on. Another objective was to make students aware of the significance of social justice in the overall development of an individual's life and to help children understand its various aspects.

COMMUNITY-BASED CARE (CBC) PROGRAM

'World Social Justice Day' was celebrated with children and parents under the Community-based Care (CBC) Program at KVD Ghate Vidyamandir, Phulenagar, Yerawada, Pune. Around 40 children and parents involved in the CBC program school committee members and Rainbow Team members participated in the event. Advocate Ashwini Jadhav addressed participants on this occasion. She said, United Nations started celebrating the 'World Day of Social Justice' annually to promote the importance of fair and just relations between the individual and society and end discrimination. She also spoke about rights, gender equality, education, nutrition, and their relation to social justice. She also requested participants to take a stand whenever they encounter incidents of injustice and contribute to prevailing social justice.

Rainbow Home team members of the CBC program Sarika Kale, Parmeshwar Chavan, Ashwini and community facilitators namely, Meera and Gangu facilitated the event. There was a discussion about the importance, and relevance of this day. Rainbow Team also screened some of the videos related to social justice and had a discussion on it to make participants understand the concept of social justice and its importance. The children were encouraged to draw pictures on the theme of social justice and express themselves.

RESIDENTIAL CARE PROGRAM AT ST. MARY'S AND ST. ANDREW'S HOSTELS

Under the Residential care Program a total of 165 children, 30 at St. Andrew's hostel and 135 at St. Mary's Hostel, participated in the event. Rainbow Team members Rubana and Anita conducted an information session for children to celebrate the day. A documentary on social justice was screened during the session, followed by an interactive discussion with children. A poster making activity was conducted with the children. Children were encouraged to ask questions and participate in the discussion throughout the event. They shared their understanding of social justice and pledged to uphold the ideals of social justice and its importance in attaining peace, equality, and prosperity. They admitted the fact that they often hear the phrase "Social Justice" a lot, but they learned the exact meaning of it in the event.

RAINBOW COMMUNITY CARE AND LEARNING CENTRE (RCCLC) IN HADAPSAR AND PHULE NAGAR

A total of 75 children and 60 parents participated in the World Social Justice Day event at Rainbow Community Care and Learning Centre (RCCLC) in Hadapsar and Phule Nagar. Rainbow Home team members, Manisha Satav, Vandana Oman and Shekhar Yama, facilitated the poster-making activity and interactive discussion on 'social justice' with children and parents. Children prepared creative posters on the theme of social justice. Parents and children shared their experiences of discrimination and injustice. They spoke about the disparity in distribution of resources like money, water, and other necessities between the rich and the poor. They said that children from other areas don't want to be friends with us and sit apart from us during meals, and that makes them sad. During the discussion on the existence of gender discrimination in society, one of the girls shared her experience of discrimination being a third girl child. This discussion and shared experience helped participants understand the concept of social justice and injustice around them and stand for each other.

Pune

व्यक्ति के समग्र विकास में सामाजिक न्याय की अहमियत

पुणे रेनबो होम की टीम ने अपने तीन अलग-अलग प्रोग्राम- कम्युनिटी बेस्ड केयर (सीबीसी), रेजिडेंशियल केयर और रेनबो कम्युनिटी केयर एंड लर्निंग सेंटर में शामिल बच्चों व उनके अभिभावकों के साथ 20 फरवरी 2023 को विश्व सामाजिक न्याय दिवस मनाया। इन तीनों प्रोग्राम के 340 बच्चों व अभिभावकों ने अलग-अलग जगहों पर हुए आयोजनों में शिरकत की। इन कार्यक्रमों का मकसद था सामाजिक बराबरी, सामाजिक न्याय और जाति, रंग, नस्ल, धर्म व लिंग आदि के आधार पर किसी भी तरह के भेदभाव के बगैर लोगों से बराबरी के बर्ताव को लेकर जागरूकता पैदा करना। बच्चों को इस बारे में भी सजग करना था कि बच्चों के इसके विभिन्न पहलू समझ में आएं और उन्हें यह पता चले कि किसी व्यक्ति के सममग्र विकास में सामाजिक न्याय की कितना अहमियत है।

कम्युनिटी बेस्ड केयर (सीबीसी) प्रोग्राम

केवीडी घाटे विद्यामंदिर, फुलेनगर, येरावड़ा पुणे में सीबीसी से जुड़े 40 बच्चों व अभिभावकों ने रेनबो टीम के सदस्यों के साथ विश्व सामाजिक न्याय दिवस के आयोजन में हिस्सा लिया। इसमें मुख्य वक्ता एडवोकेट अश्विनी जाधव थी जिन्होंने बताया कि किसी व्यक्ति के समाज के साथ न्यायपूर्ण रिश्तों को बढ़ावा देने और भेदभाव को खत्म करने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने यह विशेष दिन मनाना शुरू किया था। उन्होंने सामाजिक न्याय से अधिकारों, लैंगिक समानता, शिक्षा, पोषण के संबंध की बात की और सबसे कहा कि जब भी वे कोई अन्यायपूर्ण घटना देखें तो आवाज जरूर उठाएं।

रेजिडेंशियल केयर प्रोग्राम

सेंट एंड्रयूज हॉस्टल के 30और सेंट मेरीज हॉस्टल के 135 बच्चों ने इस दिन हुए आयोजन में हिस्सा लिया। रेनबो टीम की रुबाना और अनीता ने बच्चों के लिए विशेष सत्र आयोजित किया। बच्चों को डॉक्युमेंटरी दिखाई गई और उसके बाद बच्चों ने पोस्टर बनाने की गतिविधि में हिस्सा लिया। बच्चों को इस मुद्दे पर सवाल पूछने के लिए प्रोत्साहित किया गया। उन्होंने अपनी समझ को साझा किया और माना कि उन्होंने सामाजिक न्याय के बारे में सुना तो बहुत था लेकिन समझा पहली बार है।

रेनबो कम्युनिटी केयर एंड लर्निंग सेंटर

हडपसर व फुले नगर में रेनबो कम्युनिटी केयर एंड लर्निंग सेंटर के 75 बच्चों व 60 अभिभावकों ने इस विशेष आयोजन में हिस्सा लिया। रेनबो होम टीम की मनीषा साटव, वंदना ओमान व शेखर यामा ने सबसे साथ संवाद किया और पोस्टर बनवाए। बच्चों व अभिभावकों ने भेदभाव व अन्याय के बारे में अपने अनुभवों को साझा किया। उन्होंने गरीब व अमीर तबकों के बीच सार्वजनिक संसाधनों की गैर-बराबरीपूर्ण हिस्सेदारी के मुद्दे को भी उठाया। कई लड़कियों ने लैंगिक भेदभाव के अनुभवों को साझा किया। इस आयोजन से बच्चों को इस अवधारणा को समझने में मदद मिली और एक-दूसरे के हकों के लिए खड़े होने की समझदारी भी विकसित हुई।

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథీ • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

Patna

शौक नई चीजें सीखने का

Asha Kumari,
Gharaunda Vikasarth
Rainbow Home, Patna

मेरा घर कुरकुरी, फुलवारी शरीफ पटना में हैं। पहले मैं अपनी मां के साथ कचड़ा बीनने का काम करती थी। मेरे पिता की मौत हो चुकी है। हम दो भाई और दो बहन हैं जिनमें से मैं बड़ी बहन हूं। हम दोनों बहनें 2014 में रेनबो होम में आई। यहां आने के बाद शुरू में मुझे पढ़ाई या कोई भी और चीज समझ में नही आती थी। हालांकि, मैं हर चीज को सीखने के लिए हमेशा उत्सुक रहती थी। मेरी इसी आदत ने आज मुझे कराटे में ब्लू बेल्ट दिलाई है। मुझे संगीत का भी शौक है और मैं आज हारमोनियम बजाना सीख गई हूं। मैं कक्षा दसवीं में 70 फीसदी नंबर से पास हुई हूं। अब मैं कक्षा 11वीं में साइंस विषयों के साथ पढ़ाई कर रही हूं। रेनबो होम में रह कर मैंने पिछली गर्मी के छुट्टियों में मोमोज बनाना सीखा था। मैं आप लोगों को मोमोज बनाना बता रही हूं, तो मेरे साथ आप भी तैयार रहें।

मोमोज बनाने के लिए सामग्री-
1.मैदा 2.नमक स्वादानुसार 3. लहसुन 4. हरी मिर्च 5. पतागोभी 6. गाजर कद्दूकस 7. बेकिंग सोडा 8. प्याज 9. हरी धनिया 10. सोयाबिन 11. तेल

मोमोज की चटनी की सामग्री-
1. लाल मिर्च 2. नमक स्वादानुसार 3. टमाटर

विधि:
मैदे में नमक और बेकिंग सोडा मिलाकर पानी के साथ गूंथ लें। तेल गर्म कर लें और उसमे प्याज और लहसुन डालकर भून लें। तेज आंच पर फ्राई करने के बाद इसमें गाजर और पत्ता गौभी के साथ सभी सब्जी मिर्ची, धनिया पत्ती, अदरक डाल कर स्टीम करें। आंच से हटा दे और उसमे टमाटर सॉस नमक और काली मिर्च मिलाए। मैदा की लोई बना लें और पतला बेल ले और चार पांच राउंड में काट लें। एक राउंड लेकर उसके किनारे को गीला कर ले और बीच में थोड़ी फिलिंग करें। फिर, किनारे को एक साथ इकट्ठा कर लें और पोटली शेप बना लें। बाकी के राउंड भी इसे तरीके से भरे। दस मिनट स्टीम कर दे।

चटनी की विधि:
टमाटर और मिर्च को गर्म पानी में 40 मिनट डालकर छोड़ दें। जब मिर्च अच्छी तरह से मुलायम हो जाए तो मिर्च को पीस लें और टमाटर को अच्छे से पका कर उसे भी पीस ले और दोनों को एक साथ मिक्स कर लें और नमक स्वादनुसार डाल लें।

आप के मोमोज तैयार हैं और चटनी भी, अब प्लेट में सर्व करके खाएं व खिलाएं।

आशा कुमारी, घरौंदा विकासार्थ रेनबो होम, पटना

HOBBY OF LEARNING NEW THINGS

My house is at Kurkuri Phulwari Sharif. Earlier, I used to work as a ragpicker with my mother. My father had passed away. We are two brothers and two sisters. I am the elder sister. We both sisters came to Rainbow Home in 2014. Initially, I was not able to understand studies or anything else. But, I was always eager to learn everything. This habit of mine has earned me a blue belt in karate today. I also love to participate in music and today I have learned to play the harmonium. I have passed class 10th with 70% marks. I am currently studying science in class 11th. Staying at Rainbow Home, I learned to make momos during my last summer vacation. Today I am sharing you my recipe of preparing momos. So be ready with me.

Ingredients required to make momos-
1. Flour 2. Salt to taste 3. Garlic 4. Green chili 5. Cabbage 6. Carrot grated 7. Baking soda 8. Onion 9. Coriander 10. Soybean 11. Oil

Chutney Ingredients-
Red chilli, salt as per taste and tomato.

Method:
Knead flour, salt and baking soda with water. Heat the oil and fry onion and garlic. After frying on high flame, add all the vegetables along with carrot and cabbage, add chilli, coriander leaves, ginger and steam it. Remove from heat and add tomato sauce, salt and pepper to it. Make a ball of flour and roll it thinly and cut it into 4-5 rounds. Take a round, wet its edge and put some filling in the middle. Gather the edges together and make a potli shape. Fill the rest of the rounds in the same manner. Steam for ten minutes.

Preparing chutney
Soak tomatoes and pepper in hot water for 40 minutes and leave. When the chili becomes soft, grind the chili, after cooking the tomatoes well, grind them too and mix both together and add salt as per taste. Your momos as well as chutney are ready. Now serve them and enjoy.

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథి • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

HYDERABAD

NEED TO CALL OUT INJUSTICE EVERY TIME

The occasion of Social Justice Day on Feb 20thwas observed by 142 children from Rainbow Homes and Sneh Ghars in Hyderabad. Some parents also attended an awareness program on the significance of the day, and the need to call out injustice when they see it. They all participated actively in interaction with members from RFI members.

Interacting with Anuradha, Executive Director, Rainbow Homes Program, some of the girls and boys spoke about the significance of the Day, while some of them shared about the caste and gender based discrimination they faced. Several girls spoke about how they were forced to leave their native villages and ended up homeless and without livelihood. Several of them found shelter with their relatives, but had to leave when they started viewing them as a burden.

Some of the children's mothers also spoke out about HOW THEY WERE MADE TO SUFFER

- They had to run from pillar to post to obtain certificates for their children.
- They were made to do back-breaking work for long hours and paid a pittance.
- They never went to school so they have no alternative but to slog away in daily wage work.
- They were subjected to horrific violence in their families, and had to leave the relationship to escape the violence.
- Their children also followed in the footsteps of their oppressive fathers and resort to oppression of their sister and mothers.

Some members sang songs. Everyone recited the preamble of the Constitution together. Partners of Balyamitra network—ASRITHA, Aman Vedika, Balatejassu, Society for Rural Development, ARUN, and RFI participated in the event with children and some parents they were working with.

Besides Anuradha, Srilatha and Vinoy from RFI team also interacted with the participants. Samad and Aharoan from city desk greeted the children and gave the vote of thanks.

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథీ • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

HYDERABAD

अन्याय
जब भी देखें तो आवाज उठाएं

हैदराबाद में रेनबो होम व स्नेह घरों के 142 बच्चों ने 20 फरवरी को विश्व सामाजिक न्याय दिवस मनाया। इस दिन की अहमियत को लेकर आयोजित किए गए इस जागरूकता कार्यक्रम में कुछ माता-पिता व अभिभावकों ने भी शिरकत की। जोर इस बात पर था कि जहां भी अन्याय को देखा जाए, उसके खिलाफ आवाज उठाई जाए सभी लोगों ने आरएफआई टीम के साथ संवाद में सक्रियता से भाग लिया।

रेनबो होम्स प्रोग्राम की एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अनुराधा के साथ बातचीत में कुछ लड़कों-लड़कियों ने इस दिन की अहमियत पर बात की तो कुछ ने उन्हें पेश करने पड़ रहे जाति व लिंग आधारित भेदभाव के बारे में बताया। कई लड़कियों ने बताया कि कैसे उन्हें अपने गावों को छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा और वे बिना किसी जीवन-यापन के सहारे के बेघर हो गई थीं। कुछ को अपने नातेदारों के यहां सहारा तो मिला लेकिन जल्दी ही बोझ समझी जाने लगी और उन्हें वहां से भी बाहर निकलना पड़ा।

कुछ बच्चों की मांओं ने उन्हें झेलनी पड़ी दिक्कतों के बारे में बात की:

- उन्हें अपने बच्चों के लिए प्रमाणपत्र हासिल करने के लिए दर-दर भटकना पड़ा।
- उन्होंने घंटों कमरतोड़ मेहनत की लेकिन बदले में बहुत कम मजदूरी मिली।
- चूंकि उन्हें कभी पढ़ाई करने का मौका नहीं मिला इसलिए उनके पास दिहाड़ी काम करने के अलावा और कोई चारा न था।
- उन्हें परिवारों में काफी हिंसा व प्रताड़ना का सामना करना पड़ा और कई को तो इस हिंसा से बचने के लिए अपने रिश्ते ख़त्म करने पड़े।

कई मामलों में बच्चे भी अपने उत्पीड़क पिताओं के नक्शेकदम पर चले और लड़कों ने माताओं व बहनों पर उसी तरह की प्रताड़ना की।

इस मौके पर कई बच्चों ने गीत गाए और सबने मिलकर भारतीय संविधान की प्रस्तावना पढ़ी। बाल्यमित्र नेटवर्क के सभी सहयोगियों- आश्रिता, अमन वेदिका, बालातेजस्सु, सोसायटी फॉर रूरल डेवलपमेंट, अरुण और आरएफआई ने बच्चों व अभिभावकों के साथ आयोजन में हिस्सा लिया।

अनुराधा के अलावा आरएफआई टीम से श्रीलता व विनय भी मौजूद रहे और सिटी डेस्क के समद व अहारोन ने सबका स्वागत किया।

अब कभी हाथ फैलाने की नौबत नहीं आएगी

मैं शबनम हूं, तीन बेटियों- रुखसार, मुस्कान, शाहीन की मां। मेरे 2 बेटे भी हैं। पहले हमारी हालत बिल्कुल भी अच्छी नहीं थी। मैं और मेरी बेटियां जामा मस्जिद के गेट नंबर 1 पर भीख मांगते थे। उस भीख से ही हमारा गुजारा होता था। मेरी बेटियाँ और बेटे कभी स्कूल नहीं गए लेकिन मैं हमेशा चाहती थी कि मेरी बेटियाँ पढ़ें-लिखें। बेटियों को स्कूल भेजना मेरा सपना था लेकिन जब मैं भीख मांग रही थी तो यह संभव नहीं था। एक दिन किसी ने मुझे पूनम दीदी के बारे में बताया जो रेनबो होम्स से जुड़ी हैं। मैंने पूनम दीदी से बात की और अपने बच्चों को किलकारी होम में भर्ती कराया और उसके बाद मैंने अपने लिए काम ढूंढा। अब मैं खजूरी में बर्तन धोने वाले स्क्रबर की फैक्टरी में काम कर रही हूं। वहां से जो भी पैसा मिलता है, उससे मैं अपना घर चलाती हूं। मैं फिर कभी भीख मांगने के बारे में नहीं सोचती। फिलहाल मेरी एक बेटी किलकारी रेनबो होम्स में रहती है और दो बेटियां मेरे साथ हैं। मेरी बड़ी बेटी नौकरी के साथ-साथ पढ़ाई भी पूरी कर रही है। किलकारी रेनबो होम में मेरी बेटी को कोई परेशानी नहीं हुई। उसे होम में दिया जाने वाला खाना, सुरक्षा और शिक्षा पसंद है। वह किलकारी रेनबो होम का हिस्सा बनकर खुश है और अपनी पढ़ाई पूरी करके अपने लक्ष्यों को हासिल करना चाहती है।

शबनम, रुखसार की मां, किलकारी होम, दिल्ली

NO MORE BEGGING EVER FOR MY FAMILY

I am Shabnam, mother of three daughters-Rukhsar, Muskaan & Shaheen, and I also have 2 sons. Earlier our condition was not at all good. My daughters and I used to beg at Jama Masjid Gate No. 1. We used to live on that only. My daughters and sons never went to school, but I always wanted my daughters to be educated. It was my dream to send my daughters to school, but it was not possible while I was begging. One day someone told me about Poonam Didi who is associated with Rainbow Homes. I spoke to Poonam Didi and got my children admitted to the Kilkari home and after that, I found work for myself. Now I am working in a utensils scrubber factory in Khajuri. I run my house with whatever money I get from there. I never think of begging again. At present one of my daughters stays at Kilkari Rainbow Homes and two daughters are with me. My elder daughter is completing her studies along with her job. My daughter did not face any problems at Kilkari Rainbow Home. She likes the food, safety, and education provided in the Home. She feels blessed to be a part of Kilkari Rainbow Home and wants to complete her studies and achieve her goals.

Shabnam.

Mother of Rukhsar, Kilkari Home, Delhi

Everyone should get such opportunity

My name is Meena, and I live in Chandni Chowk area as a street dweller and beggar. I have four kids- two daughters, and two sons. One day, I met a didi from Kilkari Home and asked her to take my daughter to Rainbow Home because I felt they were getting spoiled living on the street. She suggested me to speak with Poonam didi and she came to take my kids to Kilkari Homes. However, earlier they were quite reluctant to leave me, and I had to convince them hard that their life would be better at the Home.

My husband is sick and we used to live in a jhuggi, but MCD eventually demolished our jhuggi, and we were forced to live on the streets. However, after my kids joined Kilkari Home, they started getting three meals a day, clothes, and education. I'm so happy that my kids are happy and wish that every destitute person could get the same opportunity.

Meena, Mother, Kilkari Home, Delhi

ऐसा मौका तो हरेक को मिलना चाहिए

मेरा नाम मीना है, और मैं चांदनी चौक इलाके में फुटपाथ पर रहती हूं और भीख मांग कर गुजर करती हूं। मेरे चार बच्चे हैं- दो बेटियां और दो बेटे। एक दिन, मैं किलकारी होम की एक दीदी से मिली और उन्हें मैंने मेरी बेटी को रेनबो होम्स ले जाने के लिए कहा क्योंकि मुझे लगा कि मेरे बच्चो का भविष्य सड़क पर रहते हुए खराब हो रहा है। उन्होंने सुझाव दिया कि मैं पूनम दीदी से बात कर लूं और फिर वह मेरे बच्चों को किलकारी होम्स में ले जाने के लिए आ गईं। हालाँकि, शुरू में बच्चे मुझे छोड़कर जाने के अनिच्छुक थे, फिर मुझे उन्हें समझाना पड़ा कि होम जाना ही उनके जीवन के लिए बेहतर होगा।

मेरे पति बीमार हैं और हम पहले झुग्गी में रहते थे। लेकिन एमसीडी ने हमारी झुग्गी तोड़ दी और हमें सड़क पर आ गए। हालाँकि, मेरे बच्चों के किलकारी होम में शामिल होने के बाद, कम से कम उन्हें तो दिन में तीन बार भोजन, कपड़े और पढ़ाई मिलने लगी है। मैं बहुत खुश हूं कि मेरे बच्चे खुश हैं और मैं कामना करती हूं कि हर बेसहारा व्यक्ति को इस तरह का समान अवसर मिले।

मीना, दो बच्चियों की मां, किलकारी होम, दिल्ली

BROTHER GOT A CHANCE TO STUDY

Earlier we used to live on the footpath. We used to have a lot of difficulties. We didn't have money to eat sufficient food. One day someone told me about Umeed Home, then I admitted my brother Asif to Umeed Rainbow Homes. Before coming to Umeed Rainbow homes, he did not know how to read or write. But now it all has turned out to be so good. Now Asif studies in 10th standard and likes to live in Umeed Home. He is happy living in Rainbow home and wants to complete his studies by staying there.

Mohammed Salman,

Brother of Asif, Umeed Home, Delhi

भाई को पढ़ने का मिला मौका

पहले हम फुटपाथ पर रहते थे। हमें वहां बहुत मुश्किलें होती थीं। वहां कोई सुविधा नहीं थी। हमारे पास पर्याप्त खाना खाने के लिए पैसे भी नहीं थे। एक दिन किसी ने मुझे उम्मीद होम के बारे में बताया तो मैंने अपने भाई आसिफ को उम्मीद रेनबो होम्स में भर्ती करा दिया। उम्मीद रेनबो होम्स में आने से पहले उसे पढ़ना-लिखना नहीं

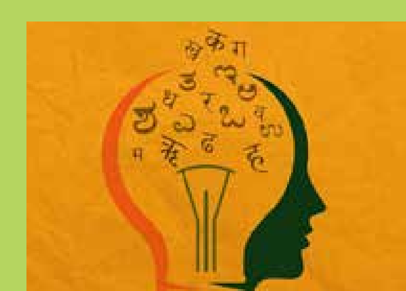

आता था। लेकिन अब यह सब बहुत अच्छा तरह करता है। अभी आसिफ 10 वीं में पढ़ता है और उसे उम्मीद होम में रहना पसंद है। वह रेनबो होम में रहकर खुश है और वहीं रहकर अपनी पढ़ाई पूरी करना चाहता है।

मोहम्मद सलमान,

आसिफ के भाई, उम्मीद होम, दिल्ली

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • ರೆಯಿನ್‌ಬೌ ಸಾಥಿ • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

Ranchi

मनीषा कुमारी,
कक्षा 8, रेनबो होम कुटे, रांची

नर्स बनना चाहती हूं

रेनबो होम्स आने से पहले मैं स्कूल नहीं जाती थी। मेरे परिवार में मेरा छोटा भाई और मेरे पिता हैं, जो हमेशा घर के बाहर ही रहते है और शराब पीकर लड़ाई करते हैं। इसलिए हम अपने बड़े पापा के पास रहते थे। मेरी बड़ी मां और पापा दोनों ही मज़दूरी करते हैं इसलिए वे भी काम की तलाश में घर के बाहर ही रहते थे। मेरी देखभाल करने वाला कोई नहीं था और घर में मुझे असुरक्षित महसूस होता था। लेकिन होम में आने के बाद मैं खुद को यहां सुरक्षित महसूस करती हूं। होम में हमारी अच्छी देखभाल होती है। घर में हमेशा खाने की परेशानी रहती थी। लेकिन होम में आने के बाद समय से खाना मिल जाता है और मैं अब अच्छे से पढ़ाई भी करती हूं। यहां रह कर मैंने बहुत सारी चीज़ें सीखी हूं जैसे- आर्ट एंड क्राफ्ट, ड्राइंग, कार्ड बनाना आदि। मैं पढ़-लिख कर नर्स बनना चाहती हूं। मैं अपने पैरों पर खड़ी होकर अपने परिवार का सहारा बनना चाहती हूं।

धुस्का: होम में रह कर मैंने खाना बनाना भी सीखा है। मैं धुस्का बनाने की विधि बताउंगीं। धुस्का बनाने के लिए 2 किलो अरवा चावल और आधा किलो उड़द की दाल भिगो देंगे। जब कुछ घंटे अच्छे से दाल और चावल भीग जाएं तो दोनों चीज़ों को मिक्सी में अलग-अलग पीसकर मिला लेंगे और उसमें स्वाद अनुसार नमक, मिर्च, जीरा, हींग, धनिया और हल्दी मिला लेंगे। फिर कढ़ाई में तेल गरम कर के घोल चम्मच से कढ़ाई में डालेंगे। वह पकने पर इडली जैसा आकार ले लेगा। जैसे ही अच्छा रंग आ जाए और दोनों तरफ से सिक जाए, तो उसे निकाल लेंगे। इस तरह धुस्का तैयार है। इसे किसी भी सब्जी या चटनी के साथ खाया जा सकता है।

I WANT TO BECOME A NURSE

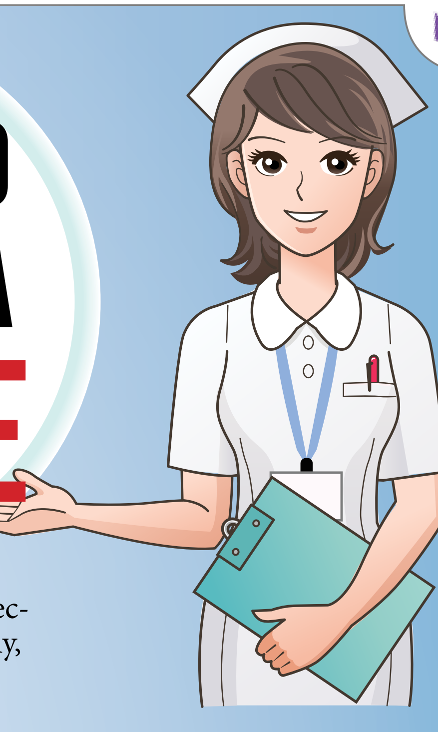

I didn't go to school before I came to Rainbow Homes. My family consists of my younger brother and my father. Father always used to remain outside the house and will fight after getting drunk. That's why we used to live with my elder uncle. My uncles and aunt, both worked as labourers. Therefore, they also generally used to stay outside the house in search of work. There was no one to look after me and I felt insecure at home. But after coming to Rainbow Home, I feel safe and secure here. We are well taken care of at Rainbow Homes. I get food on time and I study well now. Staying here, I have learned to many things like art and craft, drawing, card making etc. I want to study and become a nurse. I want to get on my feet and become the support of my family.

Dhuska: Staying at rainbow home, I have also learned to cook and I want to share the recipe of preparing Dhuska. Firstly, we need to soak 2 kg rice and 1/2 kg urad dal. When the dal and rice get soaked well for few hours, we shall grind them both separately in a mixer grinder. We shall then add salt, green chillies, cumin seeds, heeng, coriander leaves and turmeric according to taste to this batter. Then heat oil in a pan and fry the batter by dropping it from spoon in the oil. It will take a shape similar to idli. As soon as it gets a good golden color, take it out. Dhuska is ready and can be served with any vegetable or chutney.

Manisha Kumari, Std. 8,
Rainbow Home, Kute, Ranchi

वर्षा कुमारी,
कक्षा 5, रेनबो होम कुटे, रांची

गरीब बच्चों के लिए खोलूंगी संस्था

मैं रेनबो होम्स में 3 साल से रह रही हूं। जब मैं रेनबो होम में नहीं आई थी तब मैं अपनी मौसी के साथ कचरा चुनने और भीख मांगने जाती थी, और मेरी मां दाई का काम करती थी। घर में रहकर मैं मुश्किल से ही स्कूल जा पाती थी। लेकिन जब मैं रेनबो होम में आई तो मुझे यहां आ कर बहुत अच्छा लगा और मेरा दाखिला स्कूल में कराया गया। मैं रेनबो होम में आ कर बहुत खुश हूं। मैं पढ़-लिखकर गरीब बच्चों के लिए संस्था खोलना चाहती हूं। होम में खाने के मेनू में मुझे भजिया और रोटी पसंद है। रेनबो होम में आने के बाद मैंने बहुत सी चीज़ें सीखी हैं, जैसे - आर्ट एंड क्राफ्ट , पेंटिंग बनाना, कार्ड बनाना, सजावट की चीज़े बनाना आदि।

मैंने यहां रसगुल्ला बनाना भी सीखा है। आइए, देखें कैसे बनता है रसगुल्ला। सबसे पहले दूध गरम करके उसमे 3-4 चम्मच तेल और 1 कप चीनी को पकाएंगे। जब दूध अच्छे से पक जाए तो हिसाब से सूजी डाल कर उससे चलाते रहेंगे। जब सूजी पूरी तरह से दूध को सोंख ले तो पूरे मिश्रण को अलग बर्तन में ठंडा कर लेंगे। उसके बाद चीनी की चाशनी पका लेंगे। सूजी वाले मिश्रण की छोटी-छोटी बॉल बना कर तेल में तल लेंगे। बॉल को ठंडा होने पर उसे चाशनी में डाल कर 15-20 मिनट छोड़ देंगे। इस तरह सूजी के रसगुल्ले तैयार हैं।

Will work for the under privileged children

I have been living in Rainbow Homes for last 3 years. Before coming to Rainbow Home, I used to go with my aunt to collect garbage and begging, while my mother used to work as a midwife. I could hardly go to school in that atmosphere. But after I came to Rainbow Home, everything changed and I was admitted to the school. I am very happy to come to Rainbow Home. Now, I want to open an organization for poor children after completing my education. I like bhajiya and roti in the food menu at Rainbow Home. After coming to Rainbow Home, I have learned to do many things like - art and craft, painting, card making, making decoration items.

I have also learned to make rasgullas. Lets see, how we can do it. First of all we need to heat the milk and add 3-4 spoons of oil and 1 cup of sugar in it. When the milk is cooked well, then semolina will be added to it and keep stirring with it. When the semolina absorbs the milk completely, then the whole mixture shall be cooled in a utensil. Simultaneously, we will also make sugar syrup. Now we make small balls of semolina-milk batter and fry them in oil. When the small semolina ball cools down, we put them in sugar syrup and leave it for 15-20 minutes. In this way our semolina rasgullas are ready.

Varsha Kumari,
Std 5, Rainbow Home, Kute, Ranchi

Patna

PROPER MEALS AND SAFETY, CHANGED MY LIFE

Shyam Kumar,
9th Std, 14 years,
Muskurahat Aman Sneh Ghar (Amla Tola), Patna

I have been living in Rainbow Homes since 2016. Before this I used to stay at my maternal grandmother's house. I don't have parents. There was no scope of schooling for me there. My whole day was spent in roaming around and playing in the streets. I also felt insecure while staying there. Having even two meals a day was difficult at grandmother house. There was no education and no other facilities. Then, during a survey of Rainbow Home Neelu and Neetu mother came to my house. They discussed with my family members and after they agreed, took me to the home. I loved coming to Rainbow Home and I felt very comfortable and safe here. After coming to Rainbow home, I was enrolled in school.

Besides education, there are many other facilities that we get here. Rainbow Home has a different routine and every child follows the rules. Different committees have been formed for different responsibilities at Rainbow Home. In the Balsabha, children of homes keep their points to solve their problems. All the children take part in committee meetings. A Home menu is decided, according to which food is given to all the children. In which eggs, chicken, fish are served on Wednesdays, and Aloo puri is served on Sundays which I like the most. Children are given milk daily. Staying here, I have also learned to do domestic work along with education.

होम में खाना और सुरक्षा ने बदल दी जिंदगी

मैं 2016 से रेनबो होम्स में रह रहा हूँ। इससे पहले मैं अपनी नानी के घर रहता था। मेरे माता-पिता नहीं हैं। हमारे घर पर पढ़ाई-लिखाई की कोई व्यवस्था नहीं थी। मेरा पूरा दिन खेल-कूद में निकल जाता था। वहां पर रहकर मैं खुद को असुरक्षित भी महसूस करता था। घर पर दो वक़्त का खाना भी मुश्किल था। पढ़ाई के अलावा और चीज़ों की भी व्यवस्था नहीं थी। फिर रेनबो होम के एक सर्वे के दौरान नीलू और नीतू मदर मेरे घर आए, उन्होंने मेरे परिवार से बातचीत की और मुझे होम में लेकर आ गए। मुझे रेनबो होम में आकर बहुत अच्छा लगा था। मैं यहां पूरी तरह सुरक्षित महसूस करता हूँ। होम में आने के बाद मेरा स्कूल में दाखिला कराया गया।

यहाँ पढ़ाई लिखाई के अलावा बाकी बातों का भी पूरा ध्यान रखा जाता है। होम का अलग ही रूटीन है। होम में अलग-अलग जिम्मेदारियों के लिए कई सारी कमेटी बनी हुई है। होम के सभी बच्चे बालसभा में अपनी समस्याओं को दूर करने के लिए अपनी बात रखते हैं। कमिटियों की चर्चा में सभी बच्चे भागीदारी करते हैं। होम का एक मेन्यू बना है जिसके अनुसार सब बच्चों को खाना दिया जाता है। मेन्यू के हिसाब से बुधवार को अंडा, चिकन, मछली, मिलते हैं और रविवार को आलू पूड़ी मिलती है। बच्चों को रोज़ दूध दिया जाता है। यहाँ रहकर मैंने पढ़ाई के साथ-साथ घरेलू काम करना भी सीखा है।

श्याम कुमार,
14 साल, कक्षा 9वीं,
मुस्कुराहट अमन स्नेह घर (अमला टोला), पटना

यहां आकर बढ़ा आत्मविश्वास

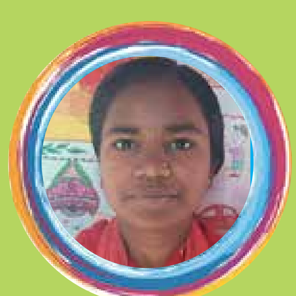

चंपा कुमारी,
17 साल, 12 वीं, घरौंदा विकासार्थ रेनबो होम, अनीसाबाद, पटना

रेनबो होम में आने से पहले मैं मां के साथ खेत में काम करती थी उसी से हमारा घर चलता था। हम छह भाई बहन हैं जिसमें बहनों की संख्या 5 हैं। मेरी सभी बहनों का कम उम्र में ही विवाह हो गया था। अब घर में सिर्फ मैं और मेरा भाई पढ़ाई कर रहे हैं। मैं 2013 में रेनबो होम में आई, आने के बाद मैं पढ़ाई के साथ अलग-अलग गतिविधियों में भी भाग लेती थी। मैंने क्राफ्ट, कराटे, पेंटिंग और अनेक तरह का खाना बनाना भी होम में सीखा है। इसके साथ लाइफ स्किल ट्रेनिंग के जरिये मुझमें जिम्मेदारी, सहभागिता, नेतृत्व क्षमता, आत्मनिर्भरता की भी समझ विकसित हुई और मेरा कॉन्फिडेंस बढ़ा।

आज मैं यहां सबको सत्तू की पूरी बनाने का तरीका बताती हूं। इसके लिए नीचे लिखे सामान की जरूरत होगी। तो मेरे साथ आप भी बनाए।

सामग्री: आटा 500 ग्राम, रिफाइंड तेल, सत्तू 250 ग्राम, सरसों तेल 2 चम्मच, मगरैला जमायन थोड़ा सा, मिर्च, अदरक, धनिया पत्ती, प्याज, लहसुन (सब बारीक कटा हुआ), नमक स्वादनुसार।
विधि: इसको बनाने के लिए सबसे पहले आटा में थोड़ा सा नमक रिफाइन और मगरैल्ला जमायन डाल कर गूंथ लें। इसके बाद सत्तू में सभी सामग्री डाल कर सुखा गूंथ लें। कढ़ाई में तेल गरम कर सें। आटे की लोई बनाकर उसमें सत्तू का मसाला भरकर हल्के हाथ से बेलकर छान लेगे। इसे गरम गरम किसी भी चटनी के साथ परोसे।

GAINED CONFIDENCE AFTER COMING HERE

Before coming to Rainbow Home, I used to work in the farm with my mother and that was the only way to run our house. We are 5 sisters and a brother. All my sisters got married in very early age. Only me and my brother are studying in the family. I came to Rainbow Home in 2013. After coming here, I used to take part in different activities along with studies. I learned craft, karate, painting and cooking. Along with this, through life skills training, developed an understanding of responsibility, participation, leadership ability, selfreliance and increased my confidence.

Today I am going to show you how to make sattu poori. For this we will need all ingredients listed below. So, lets make it together.

Ingredients: Flour 500 grams, refined oil, sattu 250 grams, mustard oil 2 tsp, mangrella ajwain a little, chili, ginger, coriander leaves, onion, garlic all finely chopped, salt as per taste
Method: To make this, first of all add a little refined oil, salt and mangrella ajwain to the flour and knead it. After that put all remaining ingredients in sattu and knead it dry. Heat oil in a pan, make a small ball of flour in it, fill it with the sattu, roll it with a light hand and fry it. Serve it hot with any chutney you wish.

Champa Kumari, 17 yrs, Std. 12th, Gharaunda Vikasaarth Rainbow Home, Anisabad, Patna

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథీ • றெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

Delhi

WHILE COOKING, CHILDREN ARE ONLY FOCUS

While preparing food for the children of Kilkari Home, I cook with the feeling of a mother. Because I know that there are many such children who have no one in this world, I serve a little more food to these children. While I serve food to them, children also look at me with affection, realising that I have been showering a little extra love on them.

I love both cooking and eating. I love eating fish since childhood. When we were kids, we used to go to the banks of the pond and catch fish with the help of fishing nets, and many times we used to catch fish even by bare hands. My mother used to cook fish in many ways. It was from her that I learned to make fried, grilled and curry fish. My father used to say that I cook fish better than my mother. His praise will always make me very happy.

But, when I was asked to cook fish for 100 children at Kilkari Home, initially, I was a little scared that how would I be able to cook for so many children. But I gathered courage and made fish with my style. Everyone at the home liked the fish made by me very much. Now I can easily cook fish for 100 children.

While preparing the menu at Kilkari Home, we keep the children in the focus. Seasonal food, budget, choice of children, health, their mental and physical development are kept in mind. For children who are weak, food is prescribed after proper medical check-up. At Kilkari home, food is prepared and given to children keeping in view their age and health. Government schools also provide mid-day meal to children so that at least one meal can be ensured to kids from weaker sections and they don't lack in mental and physical growth.

I COOK WITH THE FEELING OF A MOTHER. BECAUSE I KNOW THAT THERE ARE MANY SUCH CHILDREN WHO HAVE NO ONE IN THIS WORLD, I SERVE A LITTLE MORE FOOD TO THESE CHILDREN. WHILE I SERVE FOOD TO THEM, CHILDREN ALSO LOOK AT ME WITH AFFECTION

They are even provided with iron tablets.

Many a times, I want to cook and feed some dish for the kids off the menu, for which I have to take approval from the home coordinator who never refuses me. The children of the Kilkari home like biryani very much.

Along with studies, the physical health of the children should also improve, so the home menu is always full of nutrition. I believe that if children get proper food and clean water to drink then no child should remain malnourished.

Rahzan, Home Mother, Kilkari, Delhi

खाना बनाते समय सिर्फ बच्चों का ख्याल

किलकारी होम के बच्चों के लिए खाना बनाते समय मैं एक मां की भावना के साथ ही खाना बनाती हूँ क्योंकि मुझे पता है यहां कई ऐसे बच्चे हैं जिनका इस दुनिया में कोई नहीं है तो मैं उन बच्चो को थोड़ा खाना ज़्यादा परोसती हूं। बच्चे भी मुझे इसी तरह प्यार से देखते हैं और समझ जाते है कि मैं उन पर थोड़ा ज़्यादा प्यार जाता रही हूं।

मुझे खाना बनाना और खाना दोनों ही बहुत पसंद हैं। मुझे बचपन से ही मछली खाना बहुत पसंद है। छोटे थे तो तालाब के किनारे जा कर मछली पकड़ते थे। मछली पकड़ ने के लिए कटिया और जाल का इस्तेमाल करती थी, और तो और, कई बार हम हाथ से ही मछली पकड़ लिया करते थे। मेरी मां कई तरह से मछली बनाती थी। उन्हीं से मैंने तली हुई, आग में भुनी हुई और मसालेदार मछली बनाना सीखा है। मेरे पिता जी कहते थे कि मैं अपनी मां से ज़्यादा अच्छी मछली बनाती हूं। उस वक़्त मैं बहुत खुश होती थी। लेकिन जब मुझे किलकारी होम में 100 लोगों के लिए मछली बनाने के लिए कहा गया तो शुरू में तो मुझे थोड़ा डर लगा कि मैं इतने सारे लोगों के लिए कैसे बनाऊंगी। लेकिन मैंने हिम्मत बांधी और अंदाज़े से मछली बनाई। होम में सभी को मेरे हाथ की मछली बहुत पसंद आई। अब तो बहुत आसानी से सौ लोगों के लिए भी मछली पका लेती हूं।

खाना बनाते समय मैं एक माँ की भावना के साथ ही खाना बनाती हूँ क्योंकि मुझे पता है यहाँ कई ऐसे बच्चे हैं जिनका इस दुनिया में कोई नहीं है तो मैं उन बच्चो को थोड़ा खाना ज्यादा परोसती हूँ।

वैसे किलकारी होम में मेन्यू तैयार करते समय हम बच्चों को केंद्र में रखते हैं। मौसम, बजट, बच्चों की पसंद, स्वास्थ्य, उनके मानसिक और शारीरिक विकास को ध्यान में रखा जाता है। जो बच्चे कमज़ोर लग रहे होते हैं, उनके लिए मेडिकल चेकअप के बाद उनके खाने में बदलाव किया जाता है। होम में बच्चों को खाना उनकी उम्र और स्वास्थ्य को देखकर ही बनाया और दिया जाता है। वैसे सरकारी स्कूलों में मिड-डे मील भी दिया जाता है ताकि गरीब तबके के बच्चों को एक वक़्त का खाना मिल सके और उनके शारीरिक, मानसिक विकास में कोई कमी नहीं आए। स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए बच्चों को आयरन की गोलियां भी दी जाती हैं।

कई बार मैं बच्चों को मेन्यू से हटकर कुछ पकवान बनाकर खिलाना चाहती हूं तो इसके लिए मुझे होम कोर्डिनेटर से मंजूरी लेनी होती है जो मुझे कभी मना नहीं करती। होम के बच्चों को बिरयानी बहुत पसंद है।

पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य में भी सुधार हो, इसलिए होम का मेन्यू, हमेशा भरपूर पोषक और पौष्टिक होता है। मेरा मानना है कि बच्चों को पेट भर खाना और पीने के लिए साफ़ पानी मिले तो कोई भी बच्चा कुपोषित न रहे।

रहज़ान, होम मदर, किलकारी, दिल्ली

Hurrah!!!

GIRLS FROM KHUSHI HOME PARTICIPATED IN A MARTIAL ART TOURNAMENT AT SWASTIK PUBLIC SCHOOL. IN THE TOURNAMENT, KHUSHI HOME GIRLS WON 2 GOLD AND 3 SILVER MEDALS.

Chennai

मिडडे मील योजना के कई लाभ

भारत के लिए मिडडे मील योजना कोई नई नहीं है। तमाम सरकारें इसे चलाती रही हैं। कई माता-पिता अपने बच्चों को इस वजह से भी स्कूल भेजते हैं ताकि उन्हें कम से कम एक वक्त पोषक खाना मिल जाए। इससे उनका शैक्षणिक स्तर भी सुधरता है। होता यही है कि जिन्हें भूख का अहसास है, उनके लिए भोजन बेशकीमती चीज है, जिनके पास सबकुछ है, उनके लिए उसकी कोई अहमियत नहीं। मिडडे मील योजना से स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या बढ़ी है, खास तौर पर लड़कियों की। इसे तमिलनाडु में बाल शिक्षा की दिशा में अहम कदम माना जाता है। मैं खुद इस योजना का फायदा पाता रहा हूं। मेरी मां कहती है कि दो वक्त खाना मिलना बड़ी नियामत है। लेकिन भारत में बड़ी संख्या में लोग एक वक्त के खाने के लिए संघर्ष करते हैं। आखिर, क्यों इंसानों के बीच इतनी गैर-बराबरी है? जिनके पास कुछ नहीं है, उनन्हें भी कम से कम दो वक्त का भोजन क्यों नहीं मिलता? अब तमिलनाडु सरकार ने मिडडे मील के साथ सवेरे के नाश्ते की योजना को भी जोड़ दिया है। इसी तरह की पहलकदमियों के कारण तमिलनाडु बच्चों के लिए शिक्षा के मामले में देश के सर्वश्रेष्ठ पांच राज्यों में शामिल है।

अर्जुन एच, कक्षा 8, बाल पत्रकार, एएसपी होम चेन्नई

Benefits of mid-day meal scheme

India is not a newcomer to Mid-Day meal scheme. It has been run by successive governments. Parents choose to send their children to school also because, they get nutritional food and it improves their academic performance. Fact is, those who live with hunger see food as a precious thing while for others it is just a food. Children's enrolment has increased as a result of mid-day meal scheme, particularly for girl students. This scheme has been seen as the progression in child education in Tamil Nadu. I was myself beneficiary of this program in certain way. My mother used to say that eating at least twice a day is like being wealthy. The majority of people in India still struggle to get one meal every day. Why! Oh why, do individuals differ from one another? Why can't those who have nothing can also have proper food? The government of Tamil Nadu has now strengthened the mid-day meal programme with the introduction of a morning breakfast programme as well. Such initiatives make Tamil Nadu as one of the top states for educational advancement for children.

Arjun H, 8th std, Child Journalist, ASP Home, Chennai.

Creative Expressions

Aniket Lohra, Ranchi

Payal Kumari, Ranchi

आलोक स्वांसी, रांची

Manisha Kumari, Ranchi

BANGALORE

TOGETHER

We all sat together, discussed importance of Rights & Entitlements in our lives on the occasion of World Social Justice Day. Why it is important to listen to each other & stand together to overcome challenges. We dream together for better & equitable world. Our Homes give us safety and security to flourish.

Prayer प्रार्थना ಪ್ರಾರ್ಥನೆ

God!
Thank you for this beautiful life as part of creation!

WE believe, we wish, to live in friendship and mutual respect with head held high, in courage and self confidence.

We believe, we wish that all human beings, whether men or women, live in equality, and in happiness, whatever their colour, caste, class, religion, region, language or abilities.

We believe that, we wish to strongly oppose divisive forces and ideologies that spread hatred and divide us and support democratic and non-violent actions for justice, humanity, truth and peace, taking injustice done to others as inflicted on us.

WE believe in, we wish to contribute our mite towards, the building of more humane and free world, in good health and joyful learning and spreading knowledge.

God!

We believe in, and wish to join our tiny hands with the multitude of the people in this ages-old divine journey of love.

ईश्वर अल्लाह
हमारी ये दुआ है कि इस दुनिया में कोई भी बच्चा ना हो जिसे भोजन प्यार सुरक्षा और शिक्षा न मिले और यह भी प्रार्थना हैं कि हम अपने आस पास सबकी जिंदगी में खुशी की रोशनी भर दे।

ಈಶ್ವರ ಅಲ್ಲಾ ಜೀಸಸ್
ನಿಮ್ಮಲ್ಲಿ ನಮ್ಮೆಲ್ಲರ ಪ್ರಾರ್ಥನೆ
ಈ ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಯಾವುದೇ ಮಗು
ಆಹಾರ ಪ್ರೀತಿ, ಸುರಕ್ಷತೆ ಮತ್ತು
ಶಿಕ್ಷಣದಿಂದ ವಂಚಿತರಾಗದಿರಲಿ
ಇದು ನಮ್ಮ ಪ್ರಾರ್ಥನೆ
ನಮ್ಮ ಹಾಗೂ ನಮ್ಮ ಸುತ್ತಮುತ್ತಲಿನ
ಎಲ್ಲರ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಸಂತೋಷ
ಹಾಗೂ ಪ್ರೀತಿಯನ್ನು ಕರುಣಿಸಿ.

NEWSLETTER OF RAINBOW HOMES

(for private circulation only)

OPEN HEARTS, OPEN GATES

Rainbow Homes Program - ARUN works with Rainbow Homes (For girls) and Sneh Ghar (For boys) to empower children formerly on the streets to reclaim their childhood by providing Comprehensive Care Food, Shelter, Health and Education.

Rainbow Homes EMBRACE. EDUCATE. ENABLE.

RAINBOW HOMES PROGRAM

Association for Rural and Urban Needy

Rainbow Foundation India, National Secretariat, Vijaya Lakshmi Avenue

H.No.1-3-183/40/21/53, Flat no. 2 & 3, Road no. 5, P&T Colony, Gandhinagar, Hyderabad - 500080

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథీ • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథీ • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী